तारानन्द वियोगी

बीसम शतीक नवम दशकक साहित्यकारमे तारानन्द वियोगी प्रमुख छथि। मई, 1966 मे हिनक जन्म भेलनि। हिनक जन्मभूमि छनि मिथिलाक जानल-मानल सिद्धपीठ - महिषी। संस्कृत साहित्यमे आचार्य, एम. ए. आ पीएच. डी. कयलाक बाद किछु दिन शिक्षक रहलाह। सम्प्रति बिहार प्रशासनिक सेवाक अधिकारी छथि।

तारानन्द वियोगी धुरन्धर लेखक छथि। लिखबो कम नहि कयलनि अछि आ जे लिखलनि अछि से चर्चा एवं विमर्शक विषय रहल अछि। गजल-कविता, कथा-लघुकथा, जीवनी-संस्मरण आ निबन्ध समीक्षा - सभ क्षेत्रमे हिनक कलम समान गतिसँ चलैत अछि। यात्री पर लिखित 'तुमि चिर सारथि' अखिल भारतीय स्तर पर चर्चित भेलनि अछि। अनुवादक रूपमे सेहो हिनक ख्याति छनि।

काव्य सन्दर्भ - प्रस्तुत कविता हिनक कविता -'संग्रह हस्तक्षेप' सँ लेल गेल अछि। एहिमे मायक प्रति हिनक उद्गार व्यक्त भेल अछि। कविता सम्बोधित अछि दीदीकेँ। दीदी पीसी आ जेठ बहिन दुनू केँ कहल जाइत अछि। मायक प्रति दीदीक भाव- सिक्त अभिव्यक्तिक सीमांकन करैत कवि प्रकारान्तरसँ अपन असीम श्रद्धा निवेदित करैत छथि। वस्तुतः ई मायक काव्य-तर्पण थिक।

माँ

अपन मोनक एक-एक भाव कें
उतारि लिय' कागत पर,
अपन सोचक एक-एक सन्दर्भ केर
क' लिय' व्याख्या,
हृदयक गहन तल पर घटित होब' बला
एक-एक घटनाक
विवरण द' लिय' हमरा
मुदा दीदी!
अहाँ नहि लिखि पायब कहियो
माँ पर कविता।
शब्द चूकि जाइत अछि
संग नहि द' पबैत अछि छन्द
अलंकारक कोनहु टा छटा
छुबि नहि पबैछ माँक चरण
दीदी !
ओ वृत्त थिकीह माँ
जकर प्रदक्षिणा क' नहि पबैछ कोनो तन्त्र
ओ देवता थिकीह माँ
जनिकर निर्वचन लेल रचल नहि गेल कोनो मन्त्र।
अहाँक प्राण थिकीह माँ
अहाँक श्वासक सुरभि
अहाँक अस्तित्वक गरिमा थिकीह माँ ।

तैयार भने क' लिय' अहाँ
सर्वविध सम्बन्धक पोस्टमार्टम रिपोर्ट
एक-एक भाव - भूमि पर
रचैत चलि जाउ एक-एक अट्टालिका
मुदा हमर प्रिय दीदी !
अहाँ नहि लिखि सकब कहियो
माँ पर कविता।

शब्दार्थ

वृत्त : गोलाकार रेखा , इतिहास, आचरण
प्रदक्षिणा : देवताक प्रतिमाक चारुकात घूमव
निर्वचन : व्युत्पत्ति करब, अर्थ करब।
सुरभि : सुगन्धि

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'माँ' केर रचयिता छथि ?
(क) तारानन्द वियोगी (ख) बुद्धिनाथ मिश्र
(ग) उदयचन्द्र झा 'विनोद' (घ) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'

(ii) तारानन्द वियोगीक रचना अछि
(क) माँ (ख) हाथ
(ग) रौदी अछि (घ) वन्दना

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) अहाँक प्राण थिकीह .....
(ii) छुबि नहि पबैछ ..... चरण
(iii) ओ देवता थिकीह .....
(iv) ओ वृत्त थिकीह .....

3. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) पठित पाठमे माँक प्रति केहन भाव व्यक्त भेल अछि ?

(ii) माँ पर कविता लिखब कठिन अछि, कोना ?

(iii) कोनहु अलंकारसँ माँ केँ अलंकृत नहि कयल सकैत अछि- एकर की तात्पर्य अछि ?

(iv) माँ केँ कोनो छन्दमे नहि समेटल जा सकैत अछि - एकर की अभिप्राय ?

4. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) 'माँ' कवितामे कवि की कहय चाहैत छथि ?

(ii) 'माँ' कविता बेर-बेर पढ़ू।

(iii) पठित पाठक आधार मातृ-शक्ति पर विमर्श करू।

(iv) 'माँ' पर एकटा निबन्ध लिखू।

(v) 'माँ' पर कविता लिखब कठिन अछि - स्पष्ट करू।

5. निम्न पाँतीक सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) शब्द चूकि जाइत अछि
संग नहि द' पबैत अछि छन्द
अलंकारक कोनहु टा छटा
छुबि नहि पबैछ माँक चरण

(ii) अहाँक प्राण थिकीह माँ
अहाँक श्वासक सुरभि
अहाँक अस्तित्वक गरिमा थिकीह माँ ।

गतिविधि -

1. 'माँ' शीर्षक पर कोनो आन कविता लिखू।
2. माँ क महत्ता पर आपसमे विचार करू।
3. ''जननी-जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'' ..... एहिपर निबन्ध लिखू।

निर्देश -

1. शिक्षक छात्रकेँ माँ पर कोनो कथा सुनाबथि।
2. कोनो परिवारमे माँक भूमिकासँ शिक्षक छात्रकेँ जनतब कराबथि।